राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के संबंध में संस्थान द्वारा किए गए कार्यों का पुनर्विक्रय, उपलब्धियों, भविष्य की योजनाओं पर प्रकाश डालना और रूपरेखा तैयार करना

जी.बी.पन्त राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण संस्थान

कोसी – कटारमल, अल्मोडा (उत्तराखण्ड)

1. संस्थान का संक्षिप्त विवरण

गो.ब. पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण संस्थान की स्थापना 1988 में भारत रत्न पं. गोविन्द बल्लभ पंत के जन्म शताब्दी वर्ष के दौरान एक स्वायत्त संस्थान के रूप में पर्यावरण, वन और जलवायु मंत्रालय (MoEF&CC), भारत सरकार द्वारा हुई थी। संस्थान अपने मुख्यालय, अल्मोडा–उत्तराखण्ड एवं पांच क्षेत्रीय केन्द्रों और पर्वतीय प्रभाग, MoEF&CC, नई दिल्ली सहित संपूर्ण भारतीय हिमालयी क्षेत्र में पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक–आर्थिक विकास हेतु अनुसंधान और विकास के लिए अनिवार्य है। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के ज्ञापन संख्या 15/39/2015 – सी.एस. –I द्वारा दिनांक. 6 जून 2016 को संस्थान को राष्ट्रीय संस्थान की उपाधि प्राप्त हुई।

2. राजभाषा नीति कार्यान्वयन : प्रमुख प्रयास

संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए प्रात्साहित करना, समय–समय पर निर्देश प्रदान करना, संस्थान की वेबसाइट को द्विभाषी बनाना, कार्यालय के कंप्यूटरों में हिंदी सॉफ्टवयेर की उपलब्धता सुनिश्चित करना, पुस्तकालय में हिंदी पुस्तकों की खरीद को बढ़ाना, शब्दकोश (हिंदी अंग्रेजी और अंग्रेजी–हिंदी) और वैज्ञानिकों/शोधकर्ताओं के लिए तकनीकी शब्दावलियां (वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा तैयार) उपलब्ध कराना, हिंदी और अंग्रेजी बैठकों का एजेंडा/कार्यवृत्त जारी करना, हिंदी कार्यशालाओं/सम्मेलनों का नियमित संगठन, हिंदी पखवाड़े का आयोजन (14–28 सितंबर) और विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रोत्साहन के रूप में नकद पुरस्कार का वितरण और 2008 से राजभाषा पत्रिका, "हिमप्रभा" का नियमित प्रकाशन, प्रमुख प्रयासों में से हैं।

3. राजभाषा नीति कार्यान्वयन : उपलब्धियों की मुख्य विशेषताएं

- 06.06.2022 को आयोजित प्रथम राजभाषा निरीक्षण के आश्वासन पर संस्थान द्वारा पर्याप्त अनुवर्ती कार्रवाई की गई। इस संदर्भ में, इस संगठन को पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली के अधिसूचना संख्या 1582 नई दिल्ली, 8 जुलाई, 2013 कार्यालय आदेश 2075 (अ) के तहत अधिसूचित किया गया।

- 31.03.2024 के अनुसार, संस्थान में 76 अधिकारी/कर्मचारी (ग्रुप 'डी' और समकक्ष कर्मचारियों को छोड़कर) हैं। इनमें से 66(83.3%) हिंदी में दक्ष, 05(10.6%) को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान है और शेष 05 हिंदीं में प्रशिक्षण पा रहे है। हिंदी में दक्ष/कार्यकारी ज्ञान वाले अधिकारियों/कर्मचारियों में से 03 कर्मचारी 26–50%, 03 कर्मचारी 51–75%, 20 कर्मचारी 76: से अधिक तथा 50 कर्मचारी शत प्रतिशत अपना कार्य हिन्दी में करते हैं। इस प्रकार, 2022 की स्थिति की तुलना में 54.5% अधिक अधिकारी/कर्मचारी अपना 76% से अधिक कार्य हिन्दी में कर रहे हैं।

- 2023–24 के दौरान संस्थान ने केंद्र सरकार के मंत्रालयों और कार्यालयों को हिंदी में 100%, 100% और 90% पत्र भेजे जो क्रमशः ए, बी और सी क्षेत्रों में स्थित है। इसलिए 2022 की स्थिति की तुलना में ('ए' क्षेत्र (92.8%), 'बी' क्षेत्र (92.9%) और 'सी' क्षेत्र (71.2%) संस्थान ने इस दिशा मं उल्लेखनीय वृद्धि की है। साथ ही, 2023–24 के दौरान, फाइलों पर 96.9% नोटिंग हिंदी में लिखी गई, और हम 100% लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सदैव प्रयासरत हैं।

- विगत वर्षों में, संस्थान ने पुस्तकालय हेतु कुल पुस्तकों के व्यय में से 67.7: हिंदी पुस्तकों की खरीद पर खर्च किया। यह राशि वर्ष 2022–23 में (64.3%) तथा 2023–24 में (67.7%) है।

- संस्थान के निदेशक और राजभाषा कार्यन्वयन समिति के सदस्य नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अल्मोड़ा में भागीदारी सुनिश्चित करते हैं। राजभाषा नीति एवं हिन्दी अनुवाद के क्रियान्वयन हेतु संस्थान में कोई नियमित अधिकारी/कर्मचारी न होने के बावजूद भी संस्थान राजभाषा नीति के अनुपालन हेतु शत–प्रतिशत लक्ष्य प्राप्ति के हर संभव प्रयास कर रहा है। संसद की राजभाषा समिति द्वारा मई 2022 में प्रथम निरीक्षण में हमने लक्ष्यों को प्राप्त करने में महत्वपर्ण प्रगति की है।

- राजभाषा नीति के क्रियान्वयन लक्ष्य को शत–प्रतिशत प्राप्त करने की दिशा में यह संस्थान हिन्दी कार्यशालाओं, त्रैमासिक बैठकों/सम्मेलनों, हिन्दी पत्रिका (हिमप्रभा) का प्रकाशन, हिन्दी पखवाड़ा (14–28 सितम्बर) तथा अनके प्रतियोगिताओं का आयोजन करता हैं एवं विजेताओं को पुरस्कार वितरण हेतु हिंदी/द्विभाषी पुस्तिकाओं का प्रकाशन और प्रशिक्षण सामग्री का आयोजन करेगा। वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं को अपने शोध निष्कर्षों को हिंदी में प्रकाशित करने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए विशेष प्रयास किए जाएगें।
- छात्रों में प्रकृति विज्ञान के प्रति रुचि पैदा करने के लिए शोध निष्कर्षों का प्रसार हिन्दी में और आम लोगों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के प्रयास किये जायेगें तथा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए शोधार्थियों को प्रोत्साहित करने हेतु संस्थान द्वारा हिन्दी का प्रयोग करते हुए संचार माध्यम के रूप में प्रशिक्षण कार्यशाला एवं प्रकृति शिविर आयोजित किये जायेंगे।

(प्रो. सुनील नौटियाल)
निदेशक /अध्यक्ष, राजभाषा कार्यन्वयन समिति